

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान
ICAR-Indian Institute of Soybean Research
खंडवा रोड, इन्दौर-452001 (म.प्र.)
Khandwa Road, Indore-452001

फाइल नं. F.No. : ब्रेन स्टोर्मिंग मीट/प्रेस विज्ञप्ति/2020

दिनांक Date: 18.09.2020

India spends more than Rs.75000 crores annually on the import of edible oil. With the growing population this demand is going to further increase over the years. Therefore, to prepare a road map towards achieving self-sufficiency in edible oil production of the country, National Oilseed Brainstorming Meet (Research-Industry-Farmer Interface) is being organized by oilseed based research institutes of viz; ICAR-Indian Institute of Soybean Research, Indore, Indian Institute of Oilseed Research, Hyderabad, Indian Institute of Oil Palm Research, Pedavagi Directorate of Groundnut Research, Junagarh and Directorate of Rapeseed-Mustard Research, Bharatpur, with active involvement and participation of all the stakeholders including those involved in research, oil production, extraction, agricultural development and technology dissemination to farmers. The major objective of this brainstorming meet is (1) to identify ways and means to increase the productivity of oilseeds and edible oil, (2) to highlight changes required in policies to attract more farmers towards oilseed production (3) to highlight policy issues in import of edible oil and (4) other challenges involved in this process.

Three days brainstorming meet is scheduled from 23 to 25 September, 2020 through virtual mode and shall be live on Facebook as well as YouTube channel of ICAR-Indian Institute of Soybean Research, Indore. The first technical session of the meeting "Challenges in Research" is scheduled on September 23rd, 2020. This session would be chaired and addressed by eminent scientists and technocrats which include Dr. C.D. Mayee (Former Chairman, Agricultural Scientist Recruitment Board), Dr. S.K. Sharma (Ex-Vice Chancellor, CSKHPKV, Palampur), Dr. S. Rajendra Prasad (Vice Chancellor, UAS, Bangalore) and Directors of Oilseed based ICAR institutes.

The second technical session on 'Challenges of Industry' scheduled on 24th September 2020 will be chaired by Dr Ashok Dalwai (IAS, CEO, National Rainfed Area Authority, GOI) and co-chaired by Dr D.K. Yadava (Assistant Director General (Seed), ICAR), Dr Ratan Sharma (Technical Representative, US Soybean Export Council) and includes presentations from eminent persons like Dr Shelly Parveen (Head, Biochemistry, IARI, New Delhi), Dr. S.K. Sharma (Centre for WTO Studies, Indian Institute of Foreign Trade), Dr B.V. Mehta, (Executive Director, Solvent Extraction Association), Dr. Davish Jain (Chairman, Soybean Processors Association of India), Shri K.K. Agrawal (Vice President, Mustard Oil Processors Association of India), Dr Sai Prasad Gandra (ITC, Bangalore), Dr Dinesh Bhosale (Regional Sales Director, South Asia for AB Vista) and Shri Mritunjaya Jha (Zee Media).

Third day technical session on 'Challenges in Technology Dissemination & Adoption' is scheduled on 25th September 2020 and will be chaired Dr S.K. Malhotra (Agriculture Commissioner, GOI), Dr Randhir Singh (Assistant Director General, Extension, ICAR), Dr. S.K. Jha (Assistant Director General, Oilseeds & Pulses, ICAR) and includes presentations from invited eminent scientists/scholar like Dr. P. Chandrashekhara (DG, CCS National Institute of Agriculture Marketing, Jaipur), Dr. Chintala Govinda Rajulu (Chairman, NABARD), Dr. Shri Haresh Vyash (Chairman, Solvent Extractors Association), Dr. Girish Shah (ITC), Dr. Suresh Motwani, (Solidaridad South East Asia) and Directors of Agricultural Technology Assessment and Refinement Institutes located at Jabalpur, Bengaluru, Jodhpur, Ludhiana, Hyderabad, Umiam, Patna, Pune and Guwahati.

The issues and conclusions coming out of deliberations from each of the sessions will help preparing a road map for achieving edible oilseed self-sufficiency in the country.

अपनी बढ़ती हुयी जनसंख्या के लिए खाद्य तेल की आवश्यकता पूर्ति हेतु भारत देश को खाद्य तेल के आयात पर सालाना 75,000 करोड़ रुपये से अधिक व्यय करना पड़ता है। अपनी बढ़ती आबादी के साथ-साथ आने वाले वर्षों में खाद्य तेल की मांग भी और बढ़ने वाली है। इसलिए, देश के लिए खाद्य तेल के उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए एक रोड मैप तैयार करने के उद्देश्य से, राष्ट्रीय तिलहन विचार-मंथन बैठक (अनुसंधान-उद्योग-किसान इंटरफेस) का आयोजन तिलहनी

फसलो से सम्बंधित भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के अनुसंधान संस्थानों द्वारा किया जा रहा है जिसमे भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर, भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान , हैदराबाद, भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान , पेडावेगी, मूंगफली अनुसंधान निदेशालय , जूनागढ़ एवं सरसों अनुसंधान निदेशालय , भरतपुर आदि सभी सक्रिय भागीदार हितधारक शामिल हैं जो की सम्बंधित तिलहनी फसलो के उत्पादन एवं अनुसंधान , तेल निकासी, कृषि विकास एवं किसानों के लिए प्रौद्योगिकी का प्रसार इत्यादी के लिए कार्यरत हैं। इस विचार-मंथन बैठक के मुख्य उद्देश्य हैं: (1) खाद्य तिलहनों की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकीयाँ एवं अन्य तरीकों/साधनों की पहचान करना, (2) नीतियों में आवश्यक बदलाव करके तिलहन उत्पादन की ओर अधिक किसानों को आकर्षित किया जा सके। (4) खाद्य तेल के आयात में नीतिगत मुद्दों को समझना (4) इस प्रक्रिया में शामिल अन्य चुनौतियाँ।

तीन दिवसीय विचार-मंथन बैठक 23 -25 सितंबर , 2020 तक डिजिटल मोड के माध्यम से की जाएँगी, तथा यह भा. कृ. अनु. प.- भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर के फेसबुक के साथ-साथ यूट्यूब चैनल पर लाइव प्रसारित होगी। बैठक के प्रथम तकनीकी सत्र दिनांक 23 सितंबर , 2020 को "तिलहनी फसलो में अनुसंधान चुनौतियाँ" विषय आयोजित किया जा रहा है। इस महत्वपूर्ण तकनीकी सत्र का प्रारंभ प्रख्यात कृषि वैज्ञानिकों एवं तकनीकी विशेषज्ञों की अध्यक्षता एवं उपस्थिति में किया जायेगा जिसमें शामिल हैं, डॉ सी.डी. माई (पूर्व अध्यक्ष , कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड, भारत सरकार), डॉ एस. शर्मा (पूर्व कुलपति , सी. एस. के. एच. पी. के. वि. वि. , पालमपुर), डॉ एस. राजेंद्र प्रसाद (कुलपति , कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बेंगलोर) एवं तिलहन फसलो से सम्बंधित भा. कृ. अनु. प. संस्थानों के समस्त निदेशक।

इस महत्वपूर्ण बैठक का दूसरा तकनीकी सत्र 'उद्योग जगत की चुनौतियाँ' विषय पर दिनांक 24 सितंबर, 2020 को होगा, जिसकी अध्यक्षता श्री अशोक दलवाई (आईएएस, सीईओ, राष्ट्रीय वर्षा सिंचित क्षेत्र प्राधिकरण, भारत सरकार) एवं सह-अध्यक्षता डॉ डी. के. यादव (सहायक महानिदेशक (बीज) , भा. कृ. अनु. प.) , डॉ रतन शर्मा (तकनीकी प्रतिनिधि , यूएस सोयाबीन एक्सपोर्ट काउंसिल) करेंगे। इस सत्र में जैसे डॉ शेली परवीन (विभागाध्यक्ष , जैव रसायन, भा. कृ. अनु. सं., नई दिल्ली), डॉ एस. के. शर्मा (डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र, भारतीय विदेश व्यापार संस्थान), डॉ बी.वी. मेहता, (कार्यकारी निदेशक, सॉल्वेंट एक्सट्रैक्शन एसोसिएशन), डॉ डेविश जैन (अध्यक्ष, सोयाबीन प्रोसेसर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया), श्री के.के. अग्रवाल (वाइस प्रेसिडेंट, मस्टर्ड ऑयल प्रोसेसर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया) , डॉ साई प्रसाद गंदरा (आईटीसी , बेंगलोर), डॉ दिनेश भोसले (क्षेत्रीय बिक्री निदेशक , दक्षिण एशिया के लिए एबी विस्टा) एवं श्री मृत्युंजय झा (जी मीडिया) द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किये जायेंगे।

इस आयोजन के तीसरे दिन का तकनीकी सत्र 'कृषि तकनीकी के प्रचार-प्रसार एवं अंगीकरण में चुनौतियाँ' दिनांक 25 सितंबर, 2020 को आयोजित किया जा रहा है, जिसकी अध्यक्षता भारत सरकार के कृषि आयुक्त , डॉ एस. के. मल्होत्रा करेंगे तथा डॉ रणधीर सिंह (सहायक महानिदेशक , विस्तार, भा. कृ. अनु. प.) , डॉ एस. के. झा (सहायक महानिदेशक , तिलहन एवं दलहन, भा. कृ. अनु. प.) सह-अध्यक्ष होंगे। इस तकनीकी सत्र में देश के विभिन्न अनुसन्धान/विकास संस्थानों के प्रमुखों द्वारा प्रस्तुतियाँ दी जाएँगी जिसमे प्रमुख रूप से शामिल हैं, डॉ पी. चंद्रशेखर (महानिदेशक , सीसीएस नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ

एग्रीकल्चर मार्केटिंग, जयपुर), डॉ चिन्तन गोविंदा राजुलु (अध्यक्ष , नाबार्ड), डॉ श्री हरेश व्यास (अध्यक्ष , सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन), डॉ गिरीश शाह (आई.टी.सी.), डॉ सुरेश मोटवानी, (सॉलिडैरिडैड साउथ ईस्ट एशिया) तथा जबलपुर , बंगलुरु, जोधपुर, लुधियाना, हैदराबाद, उमियम, पटना, पुणे एवं गुवाहाटी में स्थित कृषि प्रौद्योगिकी मूल्यांकन एवं शोध संस्थान के निदेशक द्वारा प्रस्तुतियाँ दी जाएँगी।

उपरोक्त तीनो तकनीकी सत्रों के दौरान किये जाने वाले विषयों पर विचार-विमर्श के पश्चात प्राप्त निष्कर्षों को देश में खाद्य तेल की आवश्यकता एवं तिलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के उद्देश्य से बनाये जा रहे रोड-मैप तैयार करने में मदद मिलेगी।